International Journal of Multidisciplinary Research and Development

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 10, 708-710
Oct 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 5.742

सन्तोष कुमार
शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

Correspondence
सन्तोष कुमार
शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ

हिन्दी नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में रामविलास शर्मा की इतिहास–दृष्टि

सन्तोष कुमार

प्रस्तावना

समाज की प्रत्येक परिस्थिति समय के अनुसार परिवर्तित होती रहती है, जिससे समाज की सभ्यता एवं संस्कृति में भी परिवर्तन होता रहता है। जिस प्रकार यूरोप में 15वीं–16वीं शताब्दी में एक नवीन चेतना का उदय हुआ, जिसे हम 'रेनेसाँ' के नाम से जानते हैं। उसी प्रकार भारतीय इतिहास में 19 वीं शताब्दी में एक नवीन काल का उदय होता है जो वर्षों की पुरानी रुढ़ियों, परम्पराओं के विरुद्ध जागरण का उद्घोष था जिसे 'नवजागरण' के नाम से पुकारा गया। इसके अलावा इसे पुनरुत्थान, पुनर्जागरण, नवजागरण, प्रबोधन, समाज सुधार, नवोत्थान आदि नाम से भी जाना जाता है। हिन्दी साहित्य कोश में नवजागरण को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है– "नवजागरण काल में आधुनिक राष्ट्रीय राज्य परम्परा का उदय सामंत शाही का ह्रास, पूँजीवादी आगमन तथा उसके परिणाम स्वरुप एक नये वर्ग का उदय एवं भाषाओं का विकास देखने को मिलता है। मनुष्य की दृष्टि, जो सदा परलोक पर टिकी रहती थी अब वह इस लोक में संचरण करने लगी। धर्म का स्थान दर्शन ने ले लिया। संन्यासियों के स्थान पर ऐसे बुद्धिजीवियों का पदार्पण हुआ, जो मन या स्वभाव को वश में करने के बदले, उसके विकास तथा सार्थक परिणति में आस्था रखते थे।"[1] अतः सामंती प्रथा का अंत प्रारम्भ हो गया था एवं जनता पारलौकिक से लौकिक संसार की ओर मुड़ी। जिससे नवीन चेतना का उदय हुआ।

नवजागरण काल में समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों के प्रति विरोध प्रारम्भ हो गया। धार्मिक सत्ता का उन्मूलन होना भी शुरु हो गया। इस सम्बन्ध में शम्भुनाथ का यह दृष्टिकोण तर्क संगत लगता है– "नवजागरण का धर्म के संदर्भ में मुख्य एजेंडा उसकी रुढ़ियों, अंधविश्वासों और कट्टरता का विरोध था। उसका लक्ष्य आदमी की धार्मिक सत्ता के कठोर नियंत्रण और मोक्ष की धारणाओं से छुटकारा दिलाना था, ताकि वह भौतिक दुनिया का महत्व जान सके अपनी जिंदगी, स्वतंत्रता, भाईचारा तथा अन्य आधुनिकताओं के साथ जी सके।"[2] निश्चित रुप से नवजागरण का उद्देश्य धर्म के प्रति उत्पन्न अंधश्रद्धा के तत्वों को त्याग कर तथा प्रगतिशील तत्वों को ग्रहण कर जनता को नयी चेतना और तर्कयुक्त वैज्ञानिकता से परिचित कराना था।

भारत में नवजागरण की प्रक्रिया एवं उसका उद्देश्य प्रत्येक स्थान पर अलग–अलग रहा है। बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु इत्यादि स्थानों पर नवजागरण की प्रक्रिया प्रारम्भ थी। लेकिन हिन्दी में नवजागरण की प्रक्रिया को स्थापित किया महान् प्रगतिवादी आलोचक रामविलास शर्मा जी ने। नवजागरण के भिन्न–भिन्न उद्देश्यों को देखते हुए शम्भुनाथ जी लिखते हैं कि "पिछले पचास सालों के नवजागरण विवाद में मुख्यतः यही उभरकर सामने आया है कि बंग्ला नवजागरण का केंद्रीय सारतत्व बुद्धिवाद है, जबकि हिन्दी नवजागरण का सारतत्व राष्ट्रवाद है। महाराष्ट्र में दलित चेतना और सुधारवाद प्रमुख है, वहीं तमिल नवजागरण ब्राह्मण विरोधी रहा है ..... नवजागरण की इन परम्पराओं में राष्ट्रीय आत्म–पहचान के संघर्ष को पहचानते हुए स्थानीय 'थ्रस्ट' की अनदेखी एक भूल होगी। इस संदर्भ में हिन्दी नवजागरण की प्रकृति और इसका अखिल भारतीय संदर्भ रोचक है।"[3] निश्चित रुप से उन्नीसवीं सदी का हिन्दी नवजागरण राष्ट्रीय भावना के साथ विकसित हुआ। इसके साथ ही साथ इस नवजागरण में व्यक्ति स्वातंत्र्य, मनुष्य की महत्ता, धर्मनिरपेक्षता और मानवतावाद की भावना भी प्रबल रही है।

हिन्दी नवजागरण की धारणा उसकी ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया, उसके स्वरुप, उसकी विशेषताएं और भारत के अन्य क्षेत्रों के नवजागरण से उसकी स्वतंत्र पहचान का सुनिश्चित, सुव्यवस्थित तथा विस्तृत विवेचन रामविलास शर्मा जी ने किया। अपनी पुस्तक 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' के प्रारम्भ में ही रामविलास शर्मा जी ने लिखा है– "हिन्दी प्रदेश में नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से शुरू होता है।"[4] प्रमुख रुप से इस कथन में दो बातें निकलकर सामने आती हैं, पहली यह कि हिन्दी नवजागरण का आरम्भ 1857 के विद्रोह से होता है दूसरी 1857 का महाविद्रोह भारत का स्वाधीनता संग्राम था। जिसका केन्द्र बिन्दु हिन्दी प्रदेश था। इसके अलावा एक और महत्वपूर्ण बिन्दु सामने आता है कि हिन्दी नवजागरण अंग्रेजी राज के कारण नहीं अपितु उसके विरुद्ध विकसित हुआ।

रामविलास शर्मा जी हिन्दी नवजागरण की पहली मंजिल 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम को माना है एवं इसकी प्रमुख छः विशेषताएं बताई हैं जो निम्न हैं –

1. इस स्वाधीनता संग्राम के सारे देश की एकता को ध्यान में रखकर चलाया तथा राष्ट्रीय एकता का यह उद्देश्य सेना के नायकों ने सामने रखा न कि सामंती शासकों ने।
2. राज्य सत्ता की मूल समस्या सामन्तों के हित में नहीं बल्कि जनता के हित में हल की गयी थी।
3. अंग्रेजी सरकार ने जमींदारों और साहूकारों को जो भी अधिकार एवं व्यवस्थायें प्रदान की थी गदर के दौरान उनका प्रभुत्व कम होने एवं भारतीय सेना का प्रभुत्व अधिक होने से आम जनता ने उनके सम्पूर्ण अधिकारों को छीनकर सामंती शासन का विरोध किया।
4. इस स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व उन किसानों ने किया था जो फौज में सिपाहियों और सूबेदारों के पदों पर कार्यरत थे। इन फौजी किसानों के साथ जनता व सर्वहारा वर्ग के लोगों ने मिलकर हथियार बंद लड़ाई चलाई थी।
5. इस संग्राम में धर्म एवं वर्ण की सीमाओं को तोड़कर 'असाम्प्रदायिक राष्ट्रीय रुप' को हमारे सामने रखा गया। जिसे रामविलास शर्मा जी सन् सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम को अंग्रेजों द्वारा प्रेरित सम्प्रदायवाद की सबसे बड़ी पराजय मानते हैं।
6. भारत के प्रथम स्वाधीनता–संग्राम के साथ ही हमारा जातीय संग्राम भी था। इस बात के समर्थन हेतु हिन्दी प्रदेश में लिखे गये विभिन्न काव्य संग्रहों में देखा जा सकता है।

अतः हम देखते हैं कि रामविलास शर्मा जी साम्राज्यवाद, सामंतवाद, धर्म एवं वर्ण व्यवस्था आदि के घोर विरोधी थे। साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवादी नीतियों पर चिन्तन करते हुए रामविलास शर्मा जी लिखते हैं– "क्या यह अनीति नहीं है कि उन्होंने हमारे धन–धान्य की वृद्धि का कोई उपाय नहीं किया और केवल अपनी भाषा सिखाया तथा सब धन–धान्य अपने देश ले गये।"[5] इस प्रकार अंग्रेजों की इन नीतियों से भारत को हाँनि छोड़ लाभ नहीं हुआ, क्योंकि सामान्य जनता तक अंग्रेजी शासकों की सुविधायें पहुँचना दुर्लभ था।

डॉ. रामविलास शर्मा जी ने हिन्दी नवजागरण की दूसरी मंजिल भारतेन्दु युग को माना। इस युग में भारतेन्दु मंडल के लेखकों जैसे – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाकृष्णदास, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र आदि ने समाज में व्याप्त, रुढ़ियों एवं कुरीतियों पर अपनी लेखनी द्वारा घोर प्रहार किया। भारतेन्दु युगीन प्रमुख लेखकों का सम्बन्ध मुख्य रुप से पत्रकारिता से रहा था जिससे वे अपने पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से सामान्य जनमानस तक अपनी बात आसानी से पहुँचाते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी अंग्रेजी शासन में भारत की दुर्दशा पर चिन्तन करते हुए लिखते हैं –

"रोवहु! सब मिलि भारत भाई।
हा! हा! भारत–दुर्दशा देखि न जाई।।"[6]

इस प्रकार समाज–सुधार और राष्ट्रीय जनवादी चेतना से युक्त भारतेन्दु युग की पत्रकारिता अपनी सरल भाषा, मनोरंजन शैली द्वारा समाज की विसंगतियों को उजागर किया।

हिन्दी नवजागरण की तीसरी मंजिल रामविलास शर्मा जी ने द्विवेदी युग को माना है। इस युग का साहित्य रीति परम्परा का घोर विरोधी था। "साहित्य में जो रीति–विरोधी क्रांति शुरू हुई उसका पहला चरण है द्ववेदी युग और उसी का विकास छायावाद और प्रगतिवाद में होता है। ये तीनों युग एक दूसरे से भिन्न हैं, साथ ही एक दूसरे के पूरक भी हैं। द्विवेदी युग की भूमिका आधुनिक साहित्य का मार्ग प्रशस्त करने वाले अग्रदल की भूमिका है।"[7] इस युग में यथार्थवादी दृष्टिकोण, स्वच्छंदतावादी बन्धन–मुक्तता और सामाजिक प्रतिबद्धता का उद्देश्य प्रमुख था। "हिन्दी नवजागरण में स्वतंत्रता, अपनी भाषा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी शिक्षा पर जोर था। इस प्रसंग में महावीर प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक 'सम्पत्तिशास्त्र' की भूमिका में राम विलास शर्मा जी ने उजागर किया कि सरस्वती के माध्यम से द्विवेदी जी ने वैज्ञानिक चेतना और सामाजिक चेतना का प्रसार किया।"[8] अतः महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी नवजागरण की बिखरी हुई शक्ति को एकत्र किया एवं नवीन सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरुप कलात्मक साहित्य को अन्य सामाजिक विज्ञानों से जोड़ने पर बल दिया। रामविलास शर्मा जी 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' में लिखते हैं– "जो नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से आरम्भ हुआ, वह भारतेन्दु–युग में और भी व्यापक बना, उसकी साम्राज्य–विरोधी प्रवृत्तियाँ द्विवेदी युग में और पुष्ट हुई।"[9] अतः इन दोनों युगों में साम्राज्यवाद एवं सामंतवाद का विरोध प्रमुख रुप से होता रहा। द्विवेदी युग के अन्य कवियों ने हास–परिहास काव्य शैली के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर चोट करते दिखाई पड़ते हैं––"यहा हास–परिहास के साथ आक्रोश का स्वर है, समकालीन व्यवस्था की तीखी आलोचना है और व्यंग्य का तीखापन इसी आलोचना से उत्पन्न होता है। ..... इस समय अंग्रेजों की नीति थी अल्पसंख्यकों को शह देकर बहुसंख्यको को दबाए रखना। इसकी प्रतिक्रिया शंकर जी के अलावा उस युग के प्रायः सभी लेखकों में दिखई देती है।"[10] अतः इस युग के समस्त कवियों ने समाज की रुढ़िवादी एवं असामाजिक तथ्यों को अपने काव्य के माध्यम से समाज के सामने रखा।

हिन्दी नवजागरण की चौथी अवस्था रामविलास शर्मा जी ने 'छायावाद एवं निराला' के साहित्य को माना है। छायावादी साहित्य में व्यक्ति स्वातंत्र्य, राष्ट्रीयता आदि तत्व मुख्य रुप उभरकर सामने आते हैं। निराला के साहित्य में क्रान्ति का बिगुल था एवं वे पूँजीवादी व्यवस्था के विरोधी भी थे। निराला की तरह रामविलास शर्मा भी पूँजीवादी एवं साम्राज्यवादी नीति के विरोधी थे। निराला शर्मा जी के प्रिय कवि हैं, निराला के विषय में लिखते हैं – "बड़े आदमियों के बीच ही उनके बड़प्पन का भाव जाग्रत होता था। दारागंज की तंग गली के सामने कोठी को देखकर ही उन्हें महिषादल के राजप्रासादों की याद आती है। लखनऊ में हीवेट रोड के फुटपाथ पर बैठी हुई भिखारिन को देखकर उनके बड़प्पन के भाव उस 'देवी' में समाहित होते थे। कुल्ली के गाँव में अछूत बालकों को दूर से ही दोनों में फूल रखकर जाते देख उनकी आँखे छलछला आई थीं। लखनऊ में पंडाल के बाहर नंगे पाँव, भूखे पेट एक दक्षिण भारतीय युवक में उन्होंने भारत की आत्मा के दर्शन किये थे।"[11] निराला निश्चित रुप से ऐसे वर्ग की परिस्थितियों को समाज के सामने रखा जो उस तत्कालीन समाज में निम्न अवस्था में थी जिससे समाज की वास्तविक स्थिति को देखा जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रामविलास शर्मा जी ने हिन्दी नवजागरण के माध्यम से स्वाधीनता एवं जातीय एकता के आधार पर राष्ट्रीयता का बिगुल बजाया एवं समाज में फैली रुढ़िवादी, संकीर्णतावादी, साम्राज्यवादी, सामंतवादी, एवं पूँजीवादी व्यवस्था पर करारा चोट करते हुए दिखाई पडते हैं। उनके भीतर, भाषावैज्ञानिक, इतिहासकार, कवि, आलोचक आदि का रुप समाया हुआ है। निष्कर्ष रूप में गीता शर्मा लिखती हैं–"हिन्दी नवजागरण और उसकी विभिन्न मंजिलों के विशद विश्लेषण के माध्यम से डॉ. शर्मा ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद हमारे साहित्य के आधुनिक काल का सम्पूर्ण चित्र सप्रमाण उपस्थित कर दिया है। साहित्य के इतिहास के साथ ही यह भारत में अंग्रेजी राज की भूमिका और उसके खिलाफ हमारे सामंत–विरोधी, साम्राज्य–विरोधी संघर्ष का ऐतिहासिक दस्तावेज भी है। साहित्य, भाषा–विज्ञान, राजनीतिक अर्थशास्त्र और सामाजिक इतिहास की धाराएं यहां मिल जाती हैं।"[12]

सन्दर्भ

1. हिन्दी साहित्य कोश (पारिभाषिक शब्दावली) भाग–1 (सं. धीरेन्द्र वर्मा) पृ.–313–314
2. शम्भुनाथ – सामाजिक क्रान्ति के दस्तावेज, पृ.–20–21
3. आलोचना, अप्रैल–जून, 2001, हिन्दी नवजागरण की अवधारणा– संदेह के बावजूद; शम्भुनाथ
4. डॉ. रामविलास शर्मा – महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं हिन्दी नवजागरण
5. डॉ. रामविलास शर्मा – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, पृ.–79
6. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – भारत दुर्दशा (नाटक)
7. डॉ. रामविलास शर्मा – महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पृ.–277
8. आजकल, सितम्बर 2012, हिन्दी भाषियों का गर्व; रामविलास शर्मा – खगेन्द्र ठाकुर, पृ.–37
9. डॉ. रामविलास शर्मा – महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं हिन्दी नवजागरण, पृ.–19
10. वही, पृ.–357
11. आजकल, सितम्बर 2012, एक आलोचक – एक भाषा विज्ञान; रामविलास शर्मा–रमा, पृ.–44
12. रामविलास शर्मा– सं. विश्वनाथ तिवारी, (रामविलास शर्मा और हिन्दी नवजागरण–गीता शर्मा), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1985, पृ.–43